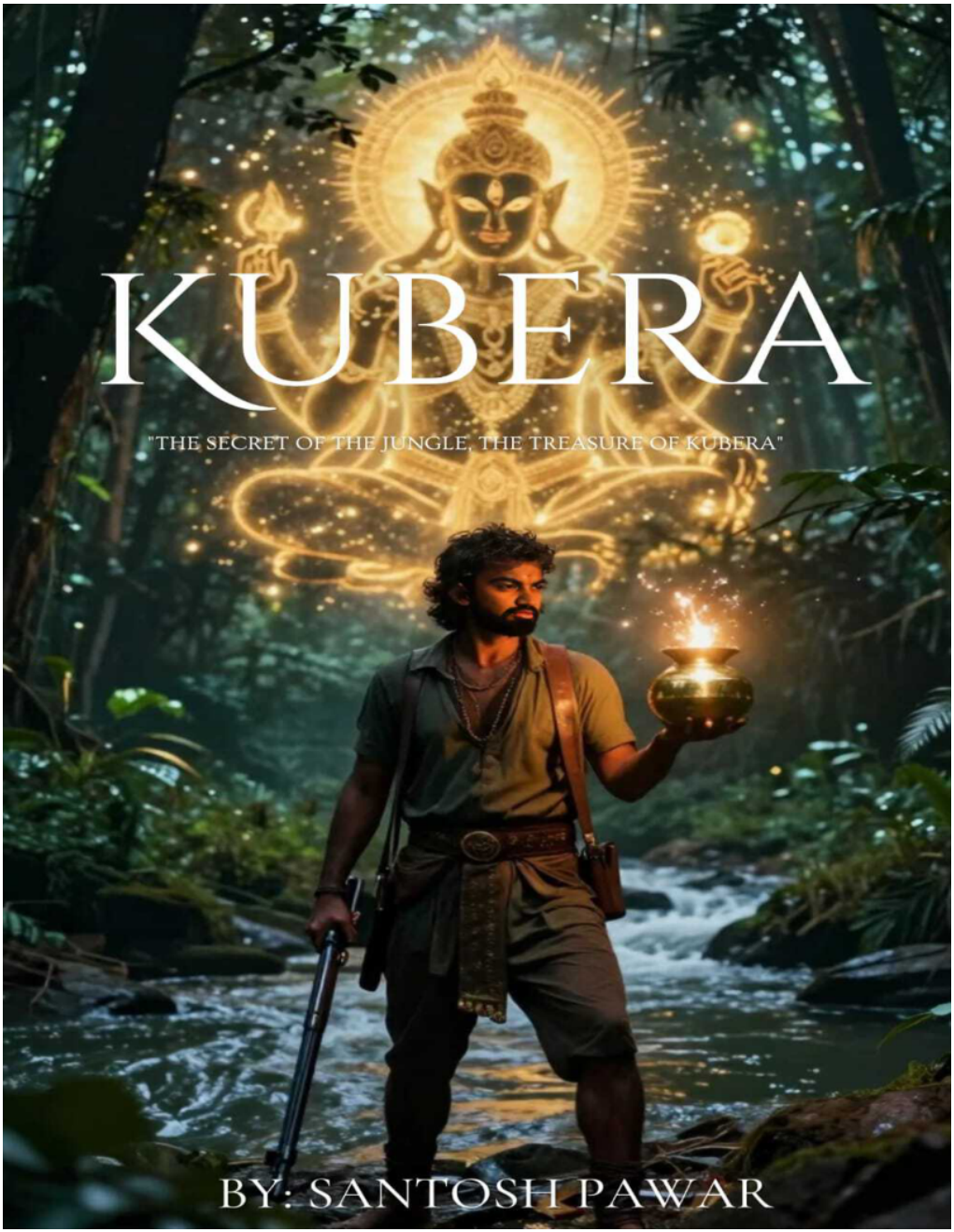
KUBERA
"THE SECRET OF THE JUNGLE, THE TREASURE OF KUBERA"
BY: SANTOSH PAWAR

कुबेरा

जंगल का रहस्य, कुबेरा का खजाना

लेखक: संतोष पवार

अध्याय 1: रहस्यमयी रात और भाग्य के यात्री

आकाश घने, काले बादलों से ढका हुआ था। क्षितिज पर गरज की एक भयानक गड़गड़ाहट गूंज रही थी, साथ ही मूसलाधार बारिश भी हो रही थी। रात का घोर अंधेरा, जो कभी-कभी अचानक, भयंकर बिजली की चमक से छंट रहा था, पूरे वातावरण को रोंगटे खड़े कर देने वाला बना रहा था। ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति स्वयं आने वाली किसी आपदा की चेतावनी फुसफुसा रही हो।

इस भयानक मौसम में, शहर से मीलों दूर, घने और संकरे जंगल के बीचोंबीच कुछ आकृतियाँ तेज़ी से आगे बढ़ रही थीं। ये कोई साधारण यात्री नहीं थे, बल्कि इस क्षेत्र के सबसे कुख्यात डाकू थे।

तेज़ दौड़ते घोड़ों की लयबद्ध गड़गड़ाहट बारिश की लगातार गर्जना के साथ मिलकर जंगल की भयानक शांति को भंग कर रही थी। जब भी बिजली चमकती, उनके कठोर चेहरों पर पल भर के लिए भय और गहरे लालच की लकीरें उभर आतीं। वे आज रात किसी साधारण डकैती के लिए नहीं निकले थे। वे एक अनकहे, प्राचीन रहस्य की ओर बढ़ रहे थे, जो सदियों से मृत्यु के आवरण में लिपटा हुआ था। एक गहरा रहस्य जिसका नाम सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते थे—"कुबेरा"!

तो प्रिय पाठकों, आइए आज रात एक ऐसी नई कहानी की शुरुआत करें जो अब तक दुनिया से छिपी रही है। एक ऐसी कहानी जो रोमांच, रहस्य और उजागर होने वाले गहरे राज़ों से भरी है...

अध्याय 2: जादुई स्पर्श और रहस्यमयी झोपड़ी

किसी तरह पास के एक गाँव से भोजन का इंतजाम करने के बाद, डाकुओं का गिरोह आखिरकार जंगल के भीतरी हिस्से तक पहुँच गया था। हालाँकि वे निर्दयी अपराधी थे, लेकिन उन्होंने आज रात किसी निर्दोष को लूटा नहीं था; वे केवल अपने पेट की भयंकर भूख मिटाना चाहते थे। अचानक, प्रकृति ने अपना भयानक रूप प्रकट कर दिया।

तेज, तूफानी हवा पूरे इलाके में चल रही थी और ऊपर छाए बादलों ने जंगल को इतने घने अंधेरे में डुबो दिया था कि उंगलियां तक दिखाई नहीं दे रही थीं। महज आधे घंटे में पूरा जंगल पानी से भर गया। इस भयानक तूफान और अंधेरे में आगे बढ़ना नामुमकिन हो गया। किसी को बिछड़ने से बचाने के लिए डाकुओं ने एक-दूसरे का हाथ कसकर पकड़ लिया और एक मानव श्रृंखला बना ली।

कालिदास सबसे आगे से दल का नेतृत्व कर रहे थे, जबकि उनके वफादार साथी रघुनाथ पीछे से रक्षा कर रहे थे। अचानक, घोर अंधेरे में, कालिदास का पैर किसी अजीब सी ठोस और सजीव चीज़ पर पड़ा। उन्हें एक तीव्र अनुभूति हुई और उन्हें एहसास हुआ कि उनके पैरों के ठीक नीचे एक मायावी प्राणी है—यह एक कछुआ था। लेकिन यह कोई साधारण प्राणी नहीं था। जैसे ही उनका पैर कछुए की पीठ पर पड़ा, कछुए ने एक धीमी, रहस्यमयी गुनगुनाहट निकाली और दूसरों के नीचे कुचले जाने से बचने के लिए तेज़ी से चार इंच आगे खिसक कर छाया में चला गया। उस

अनोखे, जादुई स्पर्श ने कालिदास के भीतर कुछ गहरा परिवर्तन ला दिया।

थोड़ी दूर आगे जाकर, जब थका हुआ दल एक विशाल वृक्ष की छाँव में रुका, तो कालिदास को अचानक एक विचित्र अनुभूति हुई। उसकी आँखें अब घने अंधेरे को भेद सकती थीं! वह ज़ोर से चिल्लाया, "सब लोग, इस वृक्ष के नीचे से तुरंत हट जाओ! ऊपर एक साँप है!"

उनके साथियों में से एक, जिसके पास सौभाग्यवश माचिस की डिब्बी थी, ने झटपट माचिस जलाकर कुछ सूखी टहनियों में आग लगा दी। जैसे ही अचानक रोशनी से ऊपर की शाखाएँ जगमगा उठीं, एक विशाल, अत्यंत विषैला साँप अपनी पकड़ खो बैठा और ठीक वहीं ज़मीन पर गिर पड़ा जहाँ वे खड़े थे। सब लोग स्तब्ध रह गए, सबकी धड़कनें रुक गईं।

रघुनाथ ने पूरी तरह से अचंभित होकर उसकी ओर देखा और पूछा, "कालिदास! इस घोर अंधेरे में ऊपर सांप होने का तुम्हें कैसे पता चला?"

अविश्वास से अपनी आँखें मलते हुए कालिदास ने उत्तर दिया, "मुझे नहीं पता कैसे... लेकिन अचानक मुझे एक प्रबल अंतर्ज्ञान हुआ कि हमारे ठीक ऊपर कोई घातक चीज मंडरा रही है।"

उन लोगों ने कालिदास को उनकी जान बचाने के लिए दिल से धन्यवाद दिया। कालिदास को आश्चर्य हुआ कि घना अंधेरा जंगल अब उनकी आँखों के सामने बिल्कुल साफ और दिखाई दे रहा था। अपनी इस नई दृष्टि से निर्देशित होकर, वे लोग उनके पीछे-पीछे जंगल में और अंदर चले गए, जब तक कि उन्हें एक पुरानी, सुनसान झोपड़ी नहीं मिल गई। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस सुनसान इमारत के अंदर एक गर्म रोशनी जल रही थी और मेज पर गरमागरम खाना करीने से सजा हुआ था। फिर भी, वहाँ दूर-दूर तक कोई इंसान नजर नहीं आ रहा था।

भूखे-प्यासे लोगों ने पेट भरकर खाना खाया। साथियों ने फिर पूछा, "कालिदास, तुमने इस सुनसान इलाके में छिपी हुई झोपड़ी को कैसे ढूंढा?"

एक गहरी, भारी सांस लेते हुए कालिदास ने बुदबुदाते हुए कहा, "पिछले एक घंटे से मेरे साथ कुछ अकथनीय घटित हो रहा है। मुझे अपने आसपास की हर छिपी हुई चीज के बारे में एक अजीब सी पूर्वसूचना मिल रही है।"

अत्यधिक थकान से चूर होकर, साथी जल्द ही गहरी नींद में सो गए। कालिदास ने भी अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन अचानक, आधी रात के सन्नाटे को तोड़ते हुए, बाहर से एक अजीब सी सरसराहट की आवाज़ गूंजी...

## अध्याय 3: जल पर कदम और कुबेरा का रहस्य

आधी रात के सन्नाटे में कालिदास अचानक जाग उठे। पूरे जंगल में गहरा सन्नाटा छाया हुआ था, फिर भी उनके कानों में एक अजीब, रहस्यमयी गूंज सुनाई दे रही थी। पूरी तरह होश में आकर उन्होंने मन ही मन बुदबुदाया, "यह कैसी आवाज़ है? यह मुझे अपनी ओर क्यों खींच रही है?" मंत्रमुग्ध होकर कालिदास झोपड़ी से बाहर निकले और उस रहस्यमयी आवाज़ का पीछा करते हुए जंगल की ओर चल पड़े।

चलते-चलते उनका सामना एक गहरी, प्रचंड नदी से हुआ। लेकिन जैसे ही कालिदास ने एक कदम आगे बढ़ाया, एक चमत्कार घटित हुआ! वे डूबे नहीं। बल्कि, वे बहते पानी की सतह पर सहजता से चलने लगे, मानो ठोस ज़मीन पर चल रहे हों। वे इस अचानक मिली अलौकिक शक्ति

से पूरी तरह चकित रह गए।

जैसे ही उसने नदी के दूसरे किनारे को छुआ, वही रहस्यमयी कछुआ नदी से उछलकर ठीक उसके सामने आ गिरा। कालिदास चौंक गया, लेकिन गौर से देखने पर उसने कछुए के प्राचीन खोल पर अजीबोगरीब पदचिह्न खुदे हुए देखे। इतना ही नहीं, जब उसने नीचे देखा तो उसके अपने पैर सुनहरी रोशनी से जगमगा रहे थे!

कालिदास ने विस्मय से बुदबुदाते हुए कहा, "क्या यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि मैंने तुम्हारे ऊपर पैर रख दिया था?"

अचानक, एक गहरी, भारी आवाज़ ने सन्नाटा तोड़ दिया, "हाँ, कालिदास। तुम बिल्कुल सही हो।"

भय से कांपते हुए कालिदास ने अंधेरे जंगल में चारों ओर नज़र दौड़ाई, "यह कौन है? कौन बोल रहा है?"

"नीचे देखो, मैं तुम्हारे ठीक सामने हूँ," कछुए ने अपने पैर हिलाते हुए उत्तर दिया।

कालिदास की आंखें अविश्वास से चौड़ी हो गईं। हिम्मत जुटाकर उन्होंने कछुए को अपने हाथों में उठाया और पूछा, "एक साधारण प्राणी मनुष्य की तरह कैसे बोल सकता है?"

कछुए ने उत्तर दिया, "मैं कोई साधारण प्राणी नहीं हूँ। मेरी पीठ पर जो कवच है, वह स्वयं भगवान ब्रह्मा द्वारा निर्मित एक अत्यंत प्राचीन और पवित्र यंत्र है। भगवान ब्रह्मा ने इसे धन के देवता कुबेर के लिए स्थापित किया था। भाग्य के नियमों के अनुसार, जो भी भाग्यशाली प्राणी मेरे कवच पर भारी भार रखेगा या उस पर कदम रखेगा, उसे दिव्य शक्तियाँ प्राप्त होंगी। ये शक्तियाँ आपको सीधे 'कुबेर गुफा' तक ले जाएँगी, जहाँ स्वयं भगवान कुबेर ने भगवान ब्रह्मा के लिए कठोर तपस्या की थी।"

कालिदास आश्चर्यचकित और उत्साहित दोनों थे; वे अब साधारण मनुष्य नहीं रहे थे। हालांकि, कछुए ने गंभीर स्वर में एक सख्त चेतावनी देते हुए कहा, "कालिदास, एक बात याद रखना! ये शक्तियां केवल नेक और धर्मपरायण कार्यों के लिए ही काम करेंगी। यदि तुमने कभी इनका उपयोग लालच के लिए या किसी अन्य आत्मा को हानि पहुंचाने के लिए किया, तो ये उसी क्षण समाप्त हो जाएंगी।"

यद्यपि कालिदास का जन्म एक भगोड़े के रूप में हुआ था, फिर भी उन्होंने मुस्कुराते हुए अपने मन में मौन प्रतिज्ञा की, "आज से मैं इन हाथों और इन शक्तियों का उपयोग केवल अच्छे कर्मों के लिए करूंगा।"

जब कालिदास और कछुआ इस गहरे रहस्य पर चर्चा कर रहे थे, तभी घनी झाड़ियों के पीछे एक पत्ता तेज़ी से सरसराया। दिव्य अंतर्ज्ञान से संपन्न कालिदास ने तुरंत महसूस किया कि कोई तीसरा व्यक्ति छाया में छिपा हुआ है और उनके पवित्र रहस्यों को सुन रहा है...

## अध्याय 4: मित्र का लोभ और तपस्वी का सामना

झाड़ियों के पीछे मंडराती परछाई कोई अजनबी नहीं थी—वह रघुनाथ था, कालिदास का सबसे करीबी दोस्त। तत्काल कोई खतरा न भांपते हुए, कालिदास ने नज़रें हटा लीं और कछुए के पीछे-पीछे जंगल में और अंदर चले गए। कछुए ने फुसफुसाते हुए कहा, "मेरे पीछे आओ, कालिदास। इस जंगल में एक विशाल, अनकहा रहस्य छिपा है। शायद इसीलिए नियति ने तुम्हें शक्ति प्रदान की है।" साथ मिलकर, वे संकरी, घुमावदार धाराओं से होकर गुजरे।

अचानक, एक तेज़ बहती नदी के किनारे, कालिदास ठहर गए। उनकी दैवीय अंतर्ज्ञान ने संकेत दिया कि पानी के पास एक विशाल चट्टान के नीचे कोई अनमोल वस्तु छिपी हुई है। "एक पल रुको, मित्र," कालिदास ने कछुए को धीरे से उथले पानी में रखते हुए कहा। उन्होंने अपनी अपार शक्ति का आह्वान किया और भारी चट्टान को एक तरफ धकेल दिया। उनकी सांसें थम गईं—उसके नीचे एक सुंदर नक्काशीदार, चमकता हुआ सोने का कलश रखा था!

जैसे ही कालिदास की उंगलियां सोने को छूईं, आकाश से दिव्य प्रकाश की एक चकाचौंध भरी किरण उतरी। उस अलौकिक चमक के बीच, धन के देवता भगवान कुबेर, अपने होठों पर एक शांत मुस्कान लिए प्रकट हुए। इससे पहले कि कालिदास उस दिव्य दृश्य को समझ पाते, प्रकाश और देवता दोनों ही वायु में विलीन हो गए।

कालिदास को इस बात का पता नहीं था कि रघुनाथ ने छिपकर सारा चमत्कार देख लिया था, और लालच के जहर ने तुरंत उसके दिमाग को दूषित कर दिया। आश्चर्य का बनावटी भाव लिए बाहर आकर रघुनाथ ने पूछा, "कालिदास! इस भयानक रात में अकेले क्या कर रहे हो? और उस चट्टान के नीचे तुम्हें क्या मिला?"

कालिदास ने उससे नजरें मिलाईं और शांत भाव से कहा, "मुझे अपने पीछे एक आभा का आभामंडल महसूस हुआ। तो क्या वह तुम थे, रघुनाथ? तुम्हें बस मेरे बगल में चलना चाहिए था।"

विषय बदलते हुए रघुनाथ ने उत्तर दिया, "यदि मैं खुलेआम आपके साथ शामिल हो जाता, तो आप यह सब अकेले कैसे कर पाते? आख़िर हम किस ओर जा रहे हैं?" कालिदास ने गंभीरता से उत्तर दिया, "इस जंगल के परम रहस्य को उजागर करने के लिए। मेरे साथ चलिए, और आपको पता चल जाएगा।"

कालिदास, रघुनाथ और रहस्यमयी कछुआ तीनों आगे बढ़ते रहे। हालांकि, रघुनाथ के गुप्त इरादों पर गहरा संदेह होने के कारण कालिदास और कछुआ चुप हो गए। इसी बीच, रघुनाथ के मन में बुरे विचार उमड़ रहे थे: 'कालिदास के पास सोने का कलश है, वह पानी पर चलते हैं और अदृश्य आत्माओं से संवाद करते हैं... इस जंगल में खजाने का विशाल भंडार है, और मैं इसे पूरा हासिल करूंगा!'

अचानक मौसम फिर से विकराल हो गया। बिजली कड़कने लगी, काले बादल गरजने लगे और मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। बारिश की चादर के बीच से उन्हें एक विशाल, प्राचीन वृक्ष दिखाई दिया। उसकी घनी छाया के नीचे एक तपस्वी ऋषि बैठे थे, उनकी आंखें गहरी ध्यानमग्न अवस्था में बंद थीं। जैसे ही कालिदास और रघुनाथ उनके पास पहुंचे, ज्ञानी ऋषि ने दिव्य ऊर्जा की एक शक्तिशाली लहर का अनुभव किया। आंखें खोलते ही उन्होंने कालिदास के चमकते सुनहरे चरण देखे। बिना कुछ कहे, वे उठे और कालिदास के चरणों में पूर्णतः प्रणाम कर दिया!

कालिदास और रघुनाथ दोनों सदमे से जम गए। एक पूजनीय, प्रबुद्ध संत का डाकू के सामने झुकना जंगल के परम रहस्य का संकेत था...

अध्याय 5: ऋषि की भविष्यवाणी और कुबेरा गुफा का आह्वान

एक परम पूज्य, ध्यानमग्न ऋषि का कालिदास के चरणों में नतमस्तक होना एक विस्मयकारी दृश्य था। इस पवित्र व्यक्ति ने अपना संपूर्ण जीवन पूर्ण भक्ति और कठोर आध्यात्मिक अनुशासन में व्यतीत किया था। कालिदास के समक्ष उनका समर्पण वन के प्राचीन रहस्यों को जोड़ने वाला अंतिम सूत्र था।

अपनी दिव्य दृष्टि से ऋषि ने यह जान लिया कि इस भयावह जंगल का सदियों पुराना श्राप केवल कालिदास को प्राप्त अलौकिक शक्तियों से ही टूट सकता है। खड़े होकर, ऋषि ने कालिदास की आँखों में देखा और बिना कहे ही कछुए और सोने के कलश की पूरी कथा सुनाई। उन्होंने कहा, "कालिदास! तुम्हारा भाग्य अत्यंत शक्तिशाली है कि वह तुम्हें इस उत्तम समय पर यहाँ लाया है। अब से मैं इस पवित्र यात्रा में तुम्हारा साथ दूंगा।"

कालिदास का हृदय परम आनंद से भर उठा, जिससे उनका यह विश्वास पुख्ता हो गया कि सर्वशक्तिमान ने उन्हें किसी उच्च उद्देश्य के लिए चुना है। वहीं दूसरी ओर, रघुनाथ की आँखों में ईर्ष्या और भय की आग भड़क उठी। उनके मन में द्वेष और भ्रम का बवंडर उठ खड़ा हुआ। उन्हें एहसास हुआ कि असीम शक्तियों के साथ कालिदास आसानी से संसार के स्वामी बन सकते हैं। अपनी बढ़ती हुई घृणा को दबाते हुए, रघुनाथ ने मन ही मन कालिदास के पतन की योजना बनाना शुरू कर दिया।

जैसे-जैसे वे अंदर की ओर बढ़ते गए, उनके सामने एक विशाल, प्राचीन गुफा प्रकट हुई। वे पौराणिक 'कुबेर गुफा' के प्रवेश द्वार पर खड़े थे, जो भगवान ब्रह्मा की पवित्र व्यवस्थाओं द्वारा संरक्षित थी। अचानक, गहराई से एक रहस्यमयी गूंज उठी, मानो कालिदास को पुकार रही हो। प्रवेश करने की तैयारी करते हुए, रघुनाथ ने अपने लालच को छिपाने के लिए भय और सावधानी का ढोंग किया।

जब कालिदास ने कहा, "रघुनाथ, मेरे भीतर से एक दिव्य वाणी मुझे बुला रही है, मुझे जाना ही होगा," तो रघुनाथ की खजाने को पाने की इच्छा और तीव्र हो गई। उसने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा, "ठीक है, अगर यही तुम्हारी इच्छा है!"

कालिदास, रघुनाथ और पवित्र ऋषि ने उस गहरी गुफा में प्रवेश किया। प्रारंभ में, गुफा घोर अंधकार से घिरी हुई थी। हालांकि, जैसे-जैसे वे आगे बढ़े, मार्ग चार अलग-अलग सुरंगों में बंट गया। सबसे दाहिनी सुरंग से एक शानदार, बहुरंगी दिव्य प्रकाश फूट पड़ा। कालिदास तुरंत समझ गए कि असली रहस्य उसी प्रकाशमान मार्ग पर छिपा है।

जैसे ही वे प्रकाश की ओर बढ़े, पत्थर की दीवारों पर प्राचीन और विचित्र चित्रलिपि दिखाई देने लगीं। रहस्यमयी चिन्हों से सजी गुफा में अजीबोगरीब जीव और भूली हुई शक्तियों के प्रतीक फैले हुए थे, जो इसे पूरी तरह से अलौकिक बना रहे थे। वे पूरी तरह से मंत्रमुग्ध होकर आगे बढ़े, तभी अचानक... एक ज़ोरदार धमाके के साथ, गुफा की छत से कोई भयानक चीज़ सीधे उनके सामने गिरी, जिससे उनकी नसों में खून जम गया...

अध्याय 6: धन का आशीर्वाद और भाई का विश्वासघात

उनके सामने गड़गड़ाहट के साथ गिरी वस्तु कोई साधारण पत्थर नहीं थी। यह एक अत्यंत प्राचीन, रहस्यमयी पुस्तक थी जो घिसे-पिटे चमड़े में बंधी हुई थी। इसके पवित्र पन्नों में घने

जंगल का संपूर्ण इतिहास, जादुई कछुआ और कुबेर गुफा के हर छिपे हुए जाल का विवरण दर्ज था। जैसे ही कालिदास ने उस ग्रंथ को उठाया, रघुनाथ का लालच बेकाबू हो गया।

हताशा से प्रेरित होकर रघुनाथ ने कालिदास के हाथों से पुस्तक छीन ली और हड़बड़ी में पन्ने पलटने लगा। उसकी नज़र उस अंश पर पड़ी जिसमें लिखा था कि जो कोई भी दिव्य कछुए पर पैर रखेगा उसे असीमित शक्ति प्राप्त हो जाएगी। अधीर होकर रघुनाथ ने केवल वही अंश पढ़ा और पुस्तक को एक तरफ फेंक दिया। फिर कालिदास ने पवित्र ग्रंथ उठाया और उसे शुरू से अंत तक अच्छी तरह पढ़ा, जिससे उन्हें आने वाले खतरों और अंतिम द्वार की कार्यप्रणाली का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया।

वे आगे बढ़े और गुफा के भीतर एक विशाल, गर्जना करते झरने के सामने आ पहुँचे। यह जल कोई साधारण धारा नहीं थी; यह सीधे वैकुंठ के दिव्य लोक से बह रहा था। उन्होंने पवित्र जल पिया, थोड़ी देर विश्राम किया और आगे बढ़े। अब मार्ग और भी खतरनाक और चमत्कारिक होता चला गया। अचानक, उनके सामने एक विशाल, तीन सिर वाला सर्प प्रकट हुआ। हालांकि, कालिदास की दिव्य आभा और कछुए की उपस्थिति को भांपते हुए, उस विशाल सर्प ने श्रद्धापूर्वक अपना सिर झुकाया और उन्हें सुरक्षित मार्ग प्रदान किया। आगे चलकर, उन्होंने उबलते ज्वालामुखी लावा की नदी को पार किया, जबकि प्रागैतिहासिक, डायनासोर जैसे पक्षी गुफा के तहखानों में उड़ रहे थे। कालिदास के प्राचीन ज्ञान को पहचानते हुए, उन जीवों ने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।

गुफा के भीतर गहराई में, उन्हें एक अद्भुत, तेजस्वी शिवलिंग मिला, जो बिल्कुल वैसा ही था जैसा रहस्यमय ग्रंथ में वर्णित था। कालिदास ने आगे बढ़ने से पहले भगवान शिव से प्रार्थना की और उनका आशीर्वाद मांगा। जल्द ही, उनके सामने एक विशाल पत्थर की दीवार आ गई, जिसके ऊपर से पानी का एक तेज बहाव बह रहा था, जिससे सभी रास्ते बंद हो गए थे। अपनी शक्तियों और ग्रंथ के मार्गदर्शन का उपयोग करते हुए, कालिदास ने सफलतापूर्वक इस असंभव बाधा को पार कर लिया।

दीवार के उस पार कुबेर के खजाने के अंतिम, विशाल द्वार थे। पुस्तक में दिए गए स्पष्ट निर्देशों का पालन करते हुए, कालिदास ने धीरे से अपना माथा उस विशाल ताले से छुआ। एक मधुर ध्वनि के साथ, भारी ताला खुल गया! जैसे ही द्वार खुले, अंदर का दृश्य देखकर वे दंग रह गए। उनके सामने भगवान कुबेर का प्रसिद्ध, कभी न खत्म होने वाला खजाना था! ठोस सोने की विशाल दीवारें, अनमोल हीरों से जगमगाते महल और चमकते सोने के सिक्कों के पहाड़!

कालिदास ने ब्रह्मांड के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन स्वर्ण साम्राज्य को देखकर रघुनाथ का सारा संतुलन बिगड़ गया। उसके मन में घोर लालच सवार हो गया; वह सारा खजाना अपने लिए चाहता था। इससे पहले कि कालिदास कुछ प्रतिक्रिया कर पाते, रघुनाथ ने पीछे से झपट्टा मारा और पूरी ताकत से कालिदास को धक्का दे दिया! कालिदास लड़खड़ाकर पत्थर के फर्श पर गिर पड़े। रघुनाथ के भीतर लालच का राक्षस पूरी तरह जागृत हो चुका था, और अब वह सोने को पाने के लिए सबसे बड़ा पाप करने को भी तैयार था...

## अध्याय 7: लोभ का नाश और ईश्वरीय कृपा

सोने के चमकते पहाड़ों की चकाचौंध में खोया रघुनाथ पागलों की तरह चिल्लाया, "यह सारा खजाना मेरा है! मैं इसे अकेले ही ले जाऊंगा!" एक छुपा हुआ, तेज धार वाला खंजर निकालकर

वह आगे बढ़ा और कालिदास के पेट में गहरा वार कर दिया। कालिदास खून से लथपथ होकर जमीन पर गिर पड़ा और कछुए को अपने पास खींच लिया।

रघुनाथ मुस्कुराया, यह सोचकर कि उसका मित्र मर चुका है। हालांकि, उसे इस बात का अंदाजा नहीं था कि कालिदास को प्राप्त दिव्य शक्तियों में अद्भुत उपचार क्षमता थी, जो कुछ ही मिनटों में जीवन लौटा सकती थी। कुछ ही क्षणों में, कालिदास का जानलेवा घाव भर गया और वह पूरी तरह होश में खड़ा हो गया। रघुनाथ की आंखें भय से चौड़ी हो गईं, "कैसे... दिल में छुरा घोंपे जाने के बाद भी तुम जीवित हो!"

यह जानकर कि चमत्कार उस प्राणी के कारण हुआ है, रघुनाथ ने निर्दयतापूर्वक कालिदास के पास से जादुई कछुआ छीन लिया। उसने उसे जमीन पर पटक दिया और घोर क्रोध से भरकर, पवित्र खोल पर विनाशकारी बल से अपना पैर पटका।

जैसे ही रघुनाथ का पैर खोल पर पड़ा, गुफा में एक भयानक, प्रलयकारी गर्जना गूंज उठी। भगवान ब्रह्मा का पवित्र यंत्र रघुनाथ के द्वेष और तीव्र लोभ का बोझ सहन नहीं कर सका। यंत्र ने ब्रह्मांडीय बिजली का एक हिंसक, अंधा कर देने वाला झटका छोड़ा जो रघुनाथ के पैर से होते हुए उसके मस्तिष्क तक पहुंचा। रघुनाथ दर्द से तड़पते हुए गिर पड़ा। ज़मीन पर तड़पते हुए उसने कालिदास से हांफते हुए कहा, "क्यों... क्यों हो रहा है? प्राचीन ग्रंथ में लिखा है कि इस पर पैर रखने से परम शक्ति प्राप्त होती है! यह मुझे क्यों नष्ट कर रहा है?"

आँखों में आँसू लिए कालिदास ने अपने मरते हुए साथी को देखा और फुसफुसाते हुए कहा, "मेरे मित्र, यह सच है कि कछुआ शक्ति प्रदान करता है। लेकिन तुमने केवल आधा ज्ञान ही पढ़ा है। उस लेख के ठीक नीचे स्पष्ट रूप से लिखा था कि जो कोई भी द्वेष, क्रोध और लोभ से भरे हृदय से इस पवित्र यंत्र पर कदम रखेगा, उसकी शीघ्र और पीड़ादायक मृत्यु होगी। मेरे मित्र, तुम पूर्ण सत्य की खोज करने में असफल रहे!" अंतिम साँस लेते हुए रघुनाथ ने अपनी आँखें हमेशा के लिए बंद कर लीं। उनके लोभ ने उन्हें भस्म कर दिया था।

उस गंभीर क्षण में, कालिदास ज़मीन पर पालथी मारकर बैठ गए और गहन ध्यान में लीन हो गए। क्षण भर में, दिव्य प्रकाश का एक तेजस्वी गोला प्रकट हुआ और स्वयं भगवान कुबेर अपने पूर्ण दिव्य वैभव के साथ प्रकट हुए। देवता के दर्शन करते हुए, कालिदास भक्ति के आँसू बहाते हुए बोले, "हे प्रभु! आपके दिव्य रूप के दर्शन से मुझे सात जन्मों के कर्मों से मुक्ति मिल गई है।"

भगवान कुबेर ने स्नेहपूर्वक मुस्कुराते हुए कालिदास के सिर पर अपना आशीर्वाद भरा हाथ रखा। "कालिदास! तुम जीवन के हर मार्ग पर विजय प्राप्त करोगे। यद्यपि तुम डाकुओं के गिरोह के साथ चले, तुम्हारा हृदय निर्मल और लोभ रहित रहा। मुझे वह भयानक रात याद है जब तुम्हारे साथियों ने निर्दोष गाँव को लूटने और गाँव वालों को नुकसान पहुँचाने की योजना बनाई थी। तुम ही थे जो उनके विरुद्ध खड़े हुए। तुमने उन्हें याद दिलाया कि निर्दोष बच्चे और गाँव वाले शांति से सो रहे हैं, और तुम केवल भोजन माँगोगे, किसी को भी सताओगे नहीं। तुम्हारी जन्मजात धार्मिकता को देखकर, मैंने उसी रात दिव्य कछुए को तुम्हारे चरणों में पहुँचाया। मैंने तुम्हें, कालिदास, एक महान और न्यायपूर्ण साम्राज्य स्थापित करने के लिए चुना है!"

कालिदास के चेहरे से प्रेम के आँसू बह रहे थे। घोर गरीबी और जीवन-यापन के संघर्ष में ही वे विधर्मी बन गए थे, फिर भी उन्होंने अपना चरित्र बनाए रखा, स्त्रियों का आदर किया और कभी किसी निर्दोष को हानि नहीं पहुँचाई। ईश्वर मनुष्य की सामाजिक स्थिति नहीं, बल्कि उसके आंतरिक चरित्र और नेक कर्मों को देखता है। आज ही के दिन भगवान कुबेर ने कालिदास को अपना चुना हुआ साधन बना लिया था।

लेखक की कलम से,

लेखक संतोष पवार, इस रचना के माध्यम से अपने सभी प्रिय पाठकों और युवा पीढ़ी को एक गहरा संदेश देना चाहते हैं। मेरी हर कहानी का मूल उद्देश्य युवाओं को अपने चरित्र और कर्मों को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करना है। एक धर्मपरायण और दयालु मनुष्य होना ही सर्वोच्च कर्तव्य है, क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर हमेशा उन्हीं के साथ चलते हैं जिनकी आत्मा द्वेष से मुक्त होती है।

जैसा कि इस वृत्तांत में देखा गया है, अपूर्ण ज्ञान एक खतरनाक अभिशाप है। जिस प्रकार रघुनाथ ने अधूरी जानकारी पर अमल करके अपनी ही बर्बादी को न्योता दिया, उसी प्रकार किसी को भी अधूरी जानकारी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए और न ही परिवार और प्रियजनों के बीच फूट डालनी चाहिए। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाला सच्चा साधक स्वाभाविक रूप से छल और लोभ से दूर रहता है और प्रत्येक स्त्री को माँ या बहन के समान अत्यंत सम्मान से देखता है। जब आप ईश्वर के प्रति समर्पित हो जाते हैं, तो ईश्वर आपके मार्ग को आशीर्वाद देने के लिए ब्रह्मांड की व्यवस्था करता है।

तो, मेरे प्रिय मित्रों, आज की हमारी महाकाव्य गाथा यहीं समाप्त होती है। भगवान कुबेर के असीम ज्ञान से परिपूर्ण होकर, कालिदास मानवता के कल्याण के लिए कौन से महान कदम उठाएंगे? क्या रघुनाथ की कहानी सचमुच यहीं समाप्त होती है, या कोई गहरा रहस्य उनका इंतजार कर रहा है? हम इन सभी का पता अगली कड़ी... "कुबेर: भाग 2" में लगाएंगे!

"कुबेरा: भाग 1 - समाप्त"

---